8979

तित्थयर

॥ जैन भवन ॥

वर्द्धमान महावीर माता त्रिशला की गोद में

आचार्य श्री कैलास सागर सूरि ज्ञान मन्दिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र,
कोबा, जि. गांधीनगर, पीन-३८२००९

वर्ष : २६ अंक : ४
जुलाई २००२

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्त्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

卐

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant

Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax: 42790 (05862)

Registered Office

143, Cotton Street
Kol - 700 007
Ph: 238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office

2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex: 217149 SOIN IN
FAX: 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २६ | अंक - ४, जुलाई | २००२

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 238-2655, e-mail : jbhawan@cal3.vsnl.net.in

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 238-2655 and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street Kolkata - 700 007 Phone : 241-1006

॥ जैन भवन ॥

संपादन

श्रीमती लता बोथरा

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	कर्म की कहानी	पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी	१४७
२.	पार्टलिपुत्र का इतिहास	पं० प्र० यतिश्री सूर्य्यमलजी महाराज	१५८
३.	जैन दर्शन में पुनर्जन्म की मान्यता	समणी मंगल प्रज्ञा	१६७
४.	जैन धर्म का मूल आधार अहिंसा	श्री पृथ्वीराज जैन	१७२

कवरपृष्ठ : स्वर्गीय हीराचन्द दुगड़ द्वारा चित्रित एवं श्री जयन्त दूगड़ के सहयोग से प्राप्त चित्र में भगवान् महावीर माता त्रिशला की गोद में।

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

कर्म की कहानी

पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी

चर्म सुनकर, जीभ देखकर अनुभव करने में असमर्थ है। कोई भी इन्द्रिय अपने विषय को छोड़कर अन्य के विषय में प्रवेश नहीं कर सकती है। आत्मा का अनुभव स्पर्श, गन्ध, रूप और शब्द से परे है। इसलिए इन्द्रिय द्वारा आत्मा का अनुभव करना संभव नहीं हो सकता है। आत्मा का सही अनुभव अतिन्द्रीय से ही संभव है। हम लाख प्रयत्न करे, इन इन्द्रियों से आत्मा का अनुभव करना संभव नहीं हैं।

एक सामान्य शरीर के दर्द को देखा, सुना, सूँघा या स्वाद लिया नहीं जा सकता है। उस दर्द को स्पर्श से अनुभव किया जा सकता है। इसीलिए शल्य क्रिया के समय डाक्टर कष्ट का अनुभव न होने के लिए स्पर्शन्द्रिय को शिथिल कर देते है।

इसी प्रकार आत्मानुभव के विषय में भी हमें स्वीकारना चाहिए।

आत्म, स्वर्ग, नरक के विषय में एक अन्य शास्त्रीय उदाहरण–

परमतारक परमात्मा श्रमण भगवान महावीर देव एक बार विचरण करते-करते आमलकप्पा नगरी में पधारे। नगर बाहर अम्बसालवन में अशोक वृक्ष के नीचे बैठ कर प्रभु धर्म देशना दिये। इस धर्म सभा में सूर्याभदेव भक्ति भाव पूर्वक प्रभु को वंदन करके धर्म देशना सुनने के लिए बैठे। धर्म देशना के अन्त में सूर्याभदेव प्रश्न किये..... हे प्रभु! मैं भवी हूँ या अभवी ? सम्यक् दृष्टि या असम्यग्दृष्टि वाला ? प्रभु महावीर उत्तर दिये हे सूर्याभ! तुम भव्य और सम्यग्दृष्टि वाला जीव हो। बहुत कम समय में तुम्हें मोक्ष की उपलब्धि होगी।

प्रसन्न होकर प्रभु की पूजा भक्ति करके सूर्याभदेव अपने स्थान पर चला गया।

उसके जाने के बाद प्रभु के प्रथम गणधर गौतम स्वामी परमात्मा महावीर को सूर्याभ् के विषय में विशेष जानकारी के लिये कुछ प्रश्न किये। जिसके उत्तर में प्रभु महावीर निम्नोक्त बाते बतायें।

जम्बुद्वीप के भरत क्षेत्र में कैकय देश की श्वेताम्बी नगरी में प्रदेशीनाम का राजा था। वह क्रूर-पापी और अत्यन्त अधर्मी था। सूर्यकान्ता नाम की उसकी रानी थी।

एक बार पार्श्वनाथ भगवान की परम्परा के चारज्ञान के धारक स्वामी केशी श्रमण श्वेताम्बी नगरी में पधारे थे। अनेक नगरवासी धर्म देशना सुनने आये थे। उन आगन्तुक नगरवासियों के समक्ष स्वामीजी धर्मदेशना दे रहे थे।

संयोग से राजा प्रदेशी भी कहीं से घूमता फिरता वहीं एक वृक्ष के नीचे छाया में आराम कर रहा था। जन सभा देखकर और आवाज सुनकर राजा प्रदेशी मन-मन में सोचने लगे। जड़ व्यक्ति जड़ की उपासना करते है, अज्ञानी मूढ़ व्यक्ति अज्ञानी और मूढ़ की ही पूजा करते हैं। यह अज्ञानी व्यक्ति हजारों अज्ञानियों के साथ बैठ कर चिल्ला रहा है।

राजा प्रदेशी अपने सारथी को बुलाकर अपने विचार व्यक्त किये। सारथी बोले.... हे स्वामी! ये तो पार्श्व प्रभु की परम्परा के परमज्ञानी चारज्ञान के धारक स्वामी केशी श्रमण है।

राजा कौतूहलता से स्वामी केशी के पास पहुंचे और पूछा..... हे भंते! क्या आप परम अवधिज्ञान के धारक है? केशी स्वामी ने कहा "हे राजन्! मुझे देख कर क्या, आपको यह विचार आया था कि वे जड़ व्यक्ति जड़ की उपासना कर रहे है मेरे उद्यान में चिल्ला रहे हैं और मुझे आराम भी करने नहीं दे रहे हैं।"

अपने विचारों को जान जाने से राजा को आश्चर्य हुआ। प्रदेशी–"भंते आप मेरे मन के विचार को किस आधार पर जान गये।" केशी स्वामी–"यह आत्मा अनन्तज्ञान का स्वामी है। जिसमें ज्ञान को मुख्य पांच भाग में विभाजित किया गया है।"

(१) मतिज्ञान--जो ज्ञान कुछ भी पढ़े-सुने बिना स्वभाव से पूर्व संस्कार या स्थानिक परिस्थिति से मिलता है उसे मतिज्ञान कहते है। जैसे-गाय के बच्चे का मां का दूध पीना।

(२) श्रुतज्ञान— पढ़ लिख या सुनकर अन्य की सहायता से जो ज्ञान उपलब्ध होता है उसे श्रुतज्ञान कहते है।

(३) अवधिज्ञान– एक सीमा तक अप्रत्यक्ष रूपी पदार्थ को देखना या जानने की शक्ति को अवधिज्ञान कहते है।

(४) मनः पर्यवज्ञान– अन्य के मन की बातों को जानना मनः पर्यवज्ञान है।

(५) केवलज्ञान– एक विशिष्ट प्रकार का ज्ञान, जिससे भूत-भविष्य और वर्तमान तीनों काल को जानने की क्षमता हो उसे केवलज्ञान कहते है।

इन पांच में से मुझे चतुर्थज्ञान मनः पर्यवज्ञान है, जिससे आपकी मनकी बात मैं जानता हूं। केशी स्वामी के प्रतिभा से प्रभावित हुए राजा वहीं बैठ गये। अनेक समय से अपने अनुत्तरित प्रश्न का उत्तर मिलेगा, वैसा उन्हें विश्वास हो गया।

राजा प्रदेशी–"हे भंते— ! मैं शरीर और जीव को एक मानता हूँ, वह सत्य है या असत्य?"

केशीस्वामी— "नहीं, राजन् ! आपका समझना ही गलत है। वास्तविक में शरीर और जीव एक नहीं परन्तु अलग-अलग द्रव्य है।"

राजाप्रदेशी— "जीव और शरीर एक ही है, अलग-अलग नहीं इस मान्यता के लिए मेरे पास अनेक प्रमाण भी है।"

मेरे दादा अत्यन्त पापी व्यक्ति थे। क्रूरता और हिंसा उनके जीवन का मूल मंत्र था। प्रजा के ऊपर अत्यन्त अत्याचार करते थे। अगर जीव और शरीर अलग है तो आपके मत से दादा अवश्य ही नरक में गये होगें। दादी धर्मी थी अवश्य ही स्वर्ग में गयी होगी। उनका मैं प्रिय पौत्र हूं। मेरे प्रति उनका अत्यन्त स्नेह था। नरक का कष्ट देखकर मुझे अवश्य ही सूचित करने आते। पर आज तक उनका कोई भी संदेश नहीं आया है। इसीलिए मैं मानता हूं कि शरीर और आत्मा एक ही है शरीर जलने पर सभी तत्त्व भस्म हो जाते हैं।

केशीस्वामी–राजन्! मेरी बात सुने! तेरी प्रियतमा स्त्री सूर्यकान्ता महाराणी को अगर तुम अन्य कोई पुरुष के साथ सहवास करते देखोगे तो उसको क्या दण्ड दोगे।

राजाप्रदेशी— मैं नराधम को मृत्युदण्ड की कठोर सजा दूंगा।

केशी स्वामी– राजन्! वह कामी पुरुष अगर प्रार्थना करें कि मुझे थोड़ा समय दिया जाय, मुझे अपने स्वजनों से एकबार मिलकर आने की अनुमति दे? तो क्या आप उसे स्वीकृति देगें।

राजा प्रदेशी— हे महामुनि! ऐसे भयंकर अपराधी को तो एक क्षण भी मैं जीवित नहीं रहने दूंगा, फिर घर जाने की बाते ही कहां आती हैं।

केशी स्वामी— राजन! उसी प्रकार आपके दादा की लाख इच्छा होते हुए भी नरक के परमाधामी जीव उन्हें यहाँ आने नहीं देगें। जिस प्रकार यहाँ व्यक्ति को आप बन्धन में रखे है वैसे ही आपके दादा बन्धन में है। अर्थात जीव और शरीर को एक मानना अनुचित है। दूसरी बात स्वर्ग से भी जीव का यहाँ आना संभव नहीं है क्योंकि देव मनुष्यलोक की असूची भूमि में आना ही नहीं चाहते और उनके पास समय भी नहीं होता है। आपके दादा पाप कर्मों का प्रायश्चित कर रहे हैं, वे यहां आने में असमर्थ हैं। जैसे कोई व्यक्ति कुछ इच्छित कार्य करने के लिए विशिष्ट शक्ति के बिना पशु का शरीर धारण करने में असमर्थ है वैसा ही एक नरक का जीव मनुष्य क्षेत्र में अपना नरकायु

पूर्ण किये बिना मनुष्य क्षेत्र में आने में असमर्थ है। वही कारण अपनी दादी के लिए भी समझें।

दूसरी बात जीव अरूपी होने के कारण कोई देख नहीं सकता है। आपको अनुभव से संदेह हुआ है कि मैंने नजर के सामने मृत्यु दण्ड देकर जीव को देखने का प्रयत्न किया है, शरीर को तार-तार बनाकर जीव को देखने का प्रयत्न किया, पर कहीं भी जीव का दर्शन नहीं हो पाया है। परन्तु राजन! मैं आपको पहले ही कह चुका हूं कि जीव को इन्द्रिय शक्ति से देखना संभव नहीं है। इसे देखने के लिए अतिन्द्रिय ज्ञान की आवश्यकता होती है। आप स्वयं अनुभव कर सकते है कि लकड़ी में आग होते हुए भी नहीं दिखती है, गुड़ में मीठापन देखने में असमर्थ है आदि-आदि।

तर्क और अनुभव की बात सुनने के बाद प्रदेशी राजा विचार मग्न हो गये। अनेक दिनों की जीवन की धारणा टूटने पर वे विचार मग्न बन गये भीतर ही भीतर एक युद्ध प्रारंभ हो गया। वर्षों की बनी धारणा का आधार नष्ट होता गया। अज्ञानता का आवरण दूर होते ही उन्हें सत्य का दर्शन हो गया।

गुरुदेव के चरण में जीवन समर्पण करके सन्मार्ग को स्वीकार करने की इच्छा व्यक्त किये। अपार करुणा के सागर गुरुदेव उन्हें आत्मशक्ति का परिचय कराते हुए बताये.........

संसार के सभी-जीवों का सांसारिक आरंभ-समारंभ को पूर्णरूप से मुक्त होना असंभव है। सभी जीव अल्पाधिक आत्मधर्म का सेवन करें इसलिए वीतराग परमात्मा ने दो प्रकार के धर्म बताये है।

(१) गृहस्थ धर्म (२) साधु धर्म

जो व्यक्ति सम्पूर्ण संसार की वृत्ति और प्रवृत्ति को त्याग नहीं कर सकते उनके लिए गृहस्थ धर्म पालन करने का मार्ग बताये हैं। इस गृहस्थ धर्म में संसार में रहकर आत्म साधना का विधान है। गृहस्थ धर्म का नियम इतना

सरल है कि हर व्यक्ति अपनी योग्यतानुसार इसको स्वीकार कर सकते है। घोर कर्म बन्ध से बच सकते है। हर व्यक्ति को अपनी पारिवारिक, शारीरिक और मानसिक योग्यतानुसार धर्मग्रहण करना चाहिए। ऐसा न हो जाय कि भावुकता में आकर हम बहुत सारे नियम स्वीकार करले, फिर पालन करने में असमर्थ हो जाये। या छोड़ने में हमें बाध्य होना पड़े। हमारी धार्मिक क्रिया में हमारा परिवार या सहधर्मी सहयोगी को कष्ट न हो इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए। सम्पूर्ण संसार के व्यवहार के त्यागी को साधु धर्म कहते है।

इस महानतम सद् धर्म की व्याख्या को सुनकर राजा प्रदेशी श्रावक धर्म स्वीकार करने के लिए तैयार हो गये। गुरुदेव उन्हें विधिवत् गृहस्थ धर्म में दीक्षित किये।

संसार की विचित्र बिडम्बना है कि व्यक्ति का स्वार्थ पूर्ण न होने पर, वह व्यक्ति कुछ भी करने के लिए तैयार हो जाता है। यह सम्पूर्ण संसार ही स्वार्थ से भरा है। अपना स्वार्थ पूर्ण नहीं होने पर प्रिय व्यक्ति भी शत्रुबन जाता है। क्योंकि स्वार्थ के साथ ही सम्पूर्ण संसार के साथ भी वही घटना घटी। राणी सूर्यकान्ता राजा के वैरागी हो जाने पर नाराज हो गई। दोनों के बीच दूरी बढ़ती गयी। एक दिन राणी सूर्यकान्ता ने भोजन में जहर देकर राजा को मारने की योजना बनाई। प्रथम इस प्रकार का दुष्कृत्य को करने का साहस नहीं जुटा पाई, पर बारम्बार चिन्तन किया हुआ कार्य प्रवृत्ति में परिणत हो ही जाता है। एक दिन राणी सूर्यकान्ता ने अपनी सम्पूर्ण शक्ति को एकत्र करके भोजन में राजा को जहर दे ही दिया। राजा को असहय वेदना के साथ नजर के सामने मृत्यु नृत्य करने लगी। वे वास्तविकता को समझ गये कि यह सूर्यकान्ता की योजना है। यह राणी का दोष नहीं मेरा ही कर्म का फल है। मैंने पूर्व जीवन में अवश्य ही किसी को दुःख दिया था, या जीवन से मारने का प्रयत्न किया था। उसी का फल आज मुझे मिल रहा है। आगे मेरा नया शत्रु न बने इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए। राजा तुरन्त धर्मस्थान में जाकर धर्मध्यान में लीन हो गये। सभी जीवों से क्षमापना करके नश्र्वर शरीर को त्याग करके देवलोक में सूर्याभ नाम का देव बनें। पूर्व जीवन में धर्मरूपी के कारण ही सूर्याभदेव को वीतराग देव के धर्म के प्रति अधिक अनुराग है।

जीवन में अतीत काल की बहुत सारी बाते हमें यथावत् याद रहती हैं। हमारा शरीर तो बदल जाता है, पर पूर्व की स्मृति यथावत् रहती है। स्मृति को यथावत रखने वाला ही आत्मा-जीव है। जीव ही हमारी स्मृति को एक ही जीवन में नहीं जन्म जन्मान्तर तक साथ लेकर चलता है। उसी को जाति स्मरण ज्ञान या पुनर्जन्मज्ञान कहते है।

संसार में जिस पदार्थ का अस्तित्व नहीं होता है उसका नाम ही नहीं होता है। अभी चाहे पदार्थ हमारे पास हो या न हो पर उस पदार्थ का अस्तित्व कहीं न कहीं होने पर ही हम उसका नाम देने में समर्थ है। भ्रमज्ञान भी वस्तु के अस्तित्व में ही संभव है।

किसी व्यक्ति को अन्धकार में रस्सी देखकर साँप का भ्रम हो सकता है अन्य कोई वस्तु का नहीं क्योंकि संसार में साँप का अस्तित्व हैं।

शरीर में आत्मा का भ्रम ही आत्मा के अस्तित्व का परिचायक है।

आँख से देखता हूँ, कान से सुनता हूँ, जीभ से स्वाद लेता हूँ, नाक से सूंघता हूँ, इस वाक्यों से सिद्ध होता है कि इन कारणों (इन्द्रियों) के द्वारा अन्य कोई अनुभव करने वाला है। कार्य तो इन्द्रियां करती हैं, पर उस विषय का अनुभव कोई करता है। इन्द्रियों के विषय को अनुभव करने वाला ही आत्मा है। वृद्धावस्था में आँखे नष्ट होने पर पूर्व की स्मृति के आधार पर आत्मा ही देखने का अनुभव करता है। वास्तविकता तो यह है कि इन्द्रियों के माध्यम से आत्मा ही अनुभव करता है। इन्द्रियां अनुभव करने में असमर्थ है। अगर वे इन्द्रियां अनुभव करने में समर्थ होती तो शरीर से आत्मा निकल जाने के बाद भी इन्द्रियां कार्यशील रहती है। अजीव का अर्थ है चेतन रहित जड़ पदार्थ। जिसमें चेतन शक्ति न हो, स्वयं अकेला कार्य करने की क्षमता न रखता हो उसे अजीव कहते है। अजीव (जड़) जीव (चेतन) के साथ मिलकर ही कार्य करने में समर्थ है।

संसार में प्रत्येक शब्द का विपरीत शब्द है। जैसे–सुख-दुःख, अपना-पराया, धूप-छांव, राग द्वेष, शत्रु-मित्र, जड़-चेतन, जीव-अजीव, प्रकाश-अन्धकार आदि।

शब्द व्यंजन है इससे कोई न कोई पदार्थ का बोध होता है। जैसे जड़ कोई दृश्य वस्तु का बोध कराता है। वैसा ही चेतन आत्मा-जीव का बोध कराता है।

मैं, मेरा आत्मा का संवाहक शब्द है। आज का भौतिक वैज्ञानिक इस बात पर पूर्ण विश्वास कर रहा है कि दृश्यमान पदार्थ से अलग एक अन्य पदार्थ है, जो सम्पूर्ण संसार का मुख्य संचालक है। इसके बिना गतिशील संसार की कल्पना भी व्यर्थ है।

मैं कौन हूँ? इस संशोधन में आज बड़े-बड़े वैज्ञानिक लगे हुए हैं। $E=Mc^2$ महान वैज्ञानिक अल्वर्ट स्टाइन कहते है–मैं जानता हूँ समग्र प्रकृति में चेतनातत्व कार्य कर रहा है। Shri Adigton कहते है–कोई अज्ञात शक्ति कार्य कर रही है उसको मैं नहीं जानता हूँ, पर संसार में चैतन्य मुख्य है और भौतिक पदार्थ गौण है। मात्र मान्यतावाद के आधार पर आज कोई भी धर्म का सिद्धान्त नहीं माना जाता है। आत्मा और धर्म एक परावैज्ञानिक तत्व है। जिसे संसार के कुछ ही व्यक्ति समझने में समर्थ है। सामूहिक रूप में–The great design नाम की वैज्ञानिक पुस्तक में अभिप्राय दिया है कि--इस विश्व का संचालन कोई चेतना शक्ति कर रही है। इसके बिना विश्व संचालन की कल्पना व्यर्थ है। सर ओलिवर कहते है–एक ऐसा समय अवश्य आवेगा जब विज्ञान द्वारा अज्ञान का अनुसंधान होगा। हम जितना मानते है उससे भी अधिक अध्यात्म शक्ति अस्तित्व में हैं, जो भौतिक जगत से परे है। फीनिक्स (एरीझोना) का एक खान मालिक जेम्सकीड १९५१ में मृत्यु से पूर्व अपने विल में लिख गया कि जो व्यक्ति आत्मतत्व को प्रमाणित करेगा, उसे दो लाख डालर इनाम के रूप में दिया जाय। इस बात को प्रमाणित करके इनाम पाने के लिए आठ व्यक्ति कोर्ट में अपना प्रमाण प्रेषित कर चुके है।

एलेक्जेंडर केनन बशीकरण के ज्ञाता Hypnotist थे। तरह-तरह के प्रयोग उन्होंने इस विद्या के माध्यम से किये The Power within नामक पुस्तक के सोलहवां प्रकरण में पुनर्जन्म के विषय में विस्तृत वर्णन लिखे है।

पुनर्जन्म के विषय में १६८३ में उन्होंने प्रयोग किया था । वे स्वयं लिखते है कि पुनर्जन्म मेरे लिए एक जटिल प्रश्न था। पर मेरे प्रयोगों से मुझे अनेक जानकारियां मिली है।

यह एक वास्तविक स्थिति है कि पुनर्जन्म एक जटिल प्रश्न है। सहजता से इसे सभी स्वीकार नहीं कर सकते है। क्योंकि इसके लिए कोई प्रत्यक्ष प्रमाण हमारे पास उपस्थित नहीं है। पर हाँ प्रयत्न करने पर असाध्य भी नहीं है, क्यों कि इसका अनेक प्रमाण हमारे स्वयं के जीवन के साथ जुड़ा हुआ है। अगर हम इन बातों को गौर से देखने का प्रयत्न करेंगे तो इसे समझने में कष्ट नहीं होगा। अनुभवी कहते है कि—वर्तमान जीवन में जो सुख-दुःख की अनुभूति होती है वे सभी इस जन्म से नहीं पर पूर्व जन्म से सम्बन्ध रखते है। पश्चिमी मनोवैज्ञानिक इसे संस्कार और पूर्व चिन्तक इसे कर्म नाम से परिचय कराते है। अगर हम भूत और वर्तमान को जोड़ने वाले कर्म को अस्वीकार कर दे तो जीवन ही एक प्रश्न बन जायेगा। अनेक मनुष्य जीवन की हर घटना को वास्तविक रूप में न पहचान पाने के कारण स्वीकार नहीं कर सकते है। परिणाम स्वरूप उन वास्तविकता को स्वीकार न करने के कारण स्वयं को भटका देता है। आत्म तत्व स्वीकार करने से हमारे जीवन की अनेक समस्यायें स्वतः ही समाप्त हो जायेगी। आत्मा को स्वीकार करते ही पुनर्जन्म सिद्ध हो जायेगा। और पुनर्जन्म से विविध कर्म आ जायेगा। पाश्चात्य वैज्ञानिक सम्मोहन के द्वारा पुनर्जन्म और आत्मा को सिद्ध कर रहे है। सम्मोहन के द्वारा सौ-दो-सौ हजार वर्ष पूर्व की बात भी स्पष्ट रूप में जानी जाती है।

इस सम्मोहन विद्या के ज्ञातास्वीकार करते है कि पुनर्जन्म को स्वीकार करने से वर्तमान जीवन की अनेक समस्याओं का समाधान हो जाता है। जो व्यक्ति अदृश्यमय से पीड़ित है, उनके भय का कारण वर्तमान जीवन से समझना कठिन हो जाता है। वशीकरण विद्या से उन कारणों को जाना और दूर भी किया जा सकता है। इस प्रयोग से आज अनेक व्यक्तियों का दुःख दूर किया जा रहा है।

एक व्यक्ति किसी शहर में एक बहुमंजिले मकान में १०वीं मंजिल पर रहते थे। वह व्यक्ति लिफ्ट में कभी भी बैठता नहीं था। उसको हमेशा भय बना रहता कि लिफ्ट में पड़कर मर जाऊंगा। बहुत सारे प्रयत्न किये पर कोई मानसिक भय में परिवर्तन नहीं आया। अन्त में एक हिप्नोटिस्ट के पास गये। स्वयं की स्थिति का सम्पूर्ण विवरण बताये। सम्पूर्ण जीवन की सभी घटनाओं को जानने के बाद पाया गया कि इस जीवन में ऐसा कोई कारण नहीं है कि लिफ्ट में भय लगे। उस व्यक्ति पर गम्भीर वशीकरण का प्रयोग किया गया। प्रयोग अवस्था में वह व्यक्ति स्वयं को चायनीज़ जनरल बताये और एक बहुत ऊँचे मकान से पड़कर सिर के पीछे के भाग में चोट लगने से मृत्यु का कारण भी बताये। इसी कारण से वे जब-जब ऊपर से नीचे उतरते है तब वे भयभीत हो जाते है। उपचार के बाद सहजभाव में आ गये।

दूसरी घटना एक स्त्री पानी से बहुत ही डरती थी। पानी के पास जाना भी उस स्त्री के लिए मृत्यु के बराबर था। मनोचिकित्सक से सम्पर्क किया गया। प्रयोग करने पर कारण मिला कि पूर्व जीवन में रोमदेश में एक गुलाम था। किसी कारण से उसके मालिक ने पानी में डुबोकर उसे मार दिया था। (इससे और एक जैन सिद्धान्त का नियम सिद्ध होता है कि स्त्री-पुरुष या पुरुष-स्त्री के रूप में जन्म लेता है) इसी कारण से पानी देखते ही पूर्व स्मृति जागृत हो जाती है, और भयभीत हो जाती है।

इस प्रकार पूर्व जीवन के कारणों को देखकर उपचार द्वारा वर्तमान जीवन की अनेक समस्याओं को दूर किया जा सकता है।

इस प्रकार के अनेक प्रयोगों से नित्यात्मा को स्वीकार किया गया है।

आत्मा अमर है। मृत्यु मात्र एक शरीर परिवर्तन की क्रिया है। जन्म कुछ समय के लिए ठहराव का एक जीवन देता है। The Power within में एलेकजेन्डर केनन अपने अनुभव का सार लिखते है कि जीवन की अन्तिम उपलब्धि आत्मा की कभी मृत्यु नहीं होती है।

लेखक स्वयं आगे लिखते है कि न्यायालय एक खूनी को मृत्युदण्ड देकर उसे दोष से मुक्त नहीं करते है, पर आगे और भी खून करने के लिए उसे तैयार करते है। क्योंकि मृत्यु के समय खून करने का संस्कार उसकी स्मृति में ताजा हो जाता है। खूनी व्यक्ति को नहीं पर संस्कार को फाँसी देना चाहिए। श्री केनन अपने प्रयोग में आत्मा (जीव) को शुक्रादि ग्रह में होने की बात भी स्वीकार करते है। इसमें शुक्र के तेज प्रकाश का भी अपूर्व वर्णन है। प्रयोगस्थ व्यक्ति ने यह भी कहा कि शुक्र के प्रकाश के सामने पृथ्वी का प्रकाश अन्धकार है।

इस प्रकार आज के वैज्ञानिक आत्मा, पूनर्जन्म, संस्कार कर्म को स्वीकार कर जैन दर्शन की वास्तविकता को स्वीकार कर रहे है। परन्तु अल्पज्ञानी या भ्रमितज्ञानी सत्य से हमेशा ही दूर रहते है।

जाति स्मरणज्ञान से भी आत्मतत्व प्रमाणित हो सकता है।

आत्मा के ऊपर लगे हुआ अज्ञान का आवरण से जब कुछ आवरण नष्ट होता है, तब पुनर्जन्म की कुछ बाते याद आती है। जैन दर्शन में ऐसे ज्ञान को जातिस्मरण ज्ञान कहते है।

एक नियम है अनुभव के बिना स्मरण नहीं हो सकता है। जीवन में कहीं न कहीं अनुभव सिद्ध तत्व ही स्मृति पटल में आ सकता है। फिर वह जन्म का हो या अन्य और कोई जन्म का संस्कार हो। जाति स्मरण ज्ञान की अनेक घंटनाये आज आये दिन दैनिक पत्र में भी पढ़ने को मिलती है। इससे यह सिद्ध होता है कि शरीर और आत्मा अलग-अलग है। आत्मा ही कर्मानुसार अलग-अलग शरीर को धारण करता है। एक आत्मा एक के बाद एक ऐसा अनेक शरीर धारण करती है।

क्रमशः

पाटलिपुत्र का इतिहास

पं० प्र० यतिश्री सूर्य्यमल जी महाराज

चन्द्रगुप्त चरित्र

जब चाणक्य राजा नन्द को (उन्मूलन) उखाड़ने की प्रतिज्ञा कर पाटलिपुत्र नगर से बाहर निकल गया; तब वह राजगद्दी पाने के योग्य मनुष्यों की खोज करने में लग गया। एक दिन घूमता-फिरता चाणक्य परिव्राजक के वेश में मयूर पोषकों के ग्राम में जा पहुँचा। उस ग्राम में सरदार की एक लड़की गर्भवती थी। उस गर्भवती की यह इच्छा हुई कि चन्द्रमा को पी जाऊँ; परन्तु इस इच्छाका पूर्ण होना असम्भव था। और उसका पूर्ण न होना भी हानिकर था; क्योंकि वैद्यक शास्त्र का मत है, कि यदि गर्भवती की इच्छा पूर्ण न की जाये, तो गर्भ नष्ट हो जाये या अयोग्य बालक पैदा हो इसलिये उस लड़की के कुटुम्ब वाले बड़े ब्याकुल थे। इसी समय चाणक्य वहाँ पहुँचा। मयूर पोषकों ने चाणक्य को सब हाल कह सुनाया। उनकी बातें सुनकर चाणक्य ने कहा,—यह काम है, तो बड़ा ही दुष्कर; पर यदि तुम मेरा कहा मानो तो मैं इस गर्भवती की इच्छा को पूर्णकर सकता हूँ। मयूर पोषकों ने कहा,-आप जो कुछ कहें, हम करने को तैयार हैं। अब चाणक्य ने कहा, कि तुम इस कन्या के गर्भ से उत्पन्न होने वाले बच्चे को मुझे दे देने की प्रतिज्ञा करो। उस कम्या के पिता ने लड़की की जीवन रक्षा के विचार से वैसा ही करना स्वीकार किया। चाणक्य ने बड़ी खूबी और युक्ति के साथ चन्द्रमा के बिम्ब से प्रतिबिम्बित एक थाली दूध उस लड़की को पिला दिया। यह काम इस खूबी से किया गया, कि उस लड़की को पूरा विश्वास हो गया, कि मैंने चन्द्रमा को पी लिया। इच्छा पूर्ण हो जाने पर यथा समय उस कन्या के गर्भ से चन्द्रमा के समान सौम्य और सूर्य के समान तेजस्वी पुत्र का जन्म हुआ। चन्द्रमा को पान करने की अभिलाषा करने वाली माता से जन्म ग्रहण करने के कारण माता-पिता ने उस बालक का नाम चन्द्रगुप्त रखा। चन्द्रगुप्त दिन-दिन चन्द्रकला के समान ही बढ़ने लगा और कुछ ही दिन में बड़ा हो गया। अपने पड़ोस के लड़कों के साथ वह गांव के बाहर चला जाता और अनेक तरह की क्रीड़ा करता था। उसके

खेल अन्य लड़कों के समान नहीं होते थे। वह किसी को हाथी, किसी को घोड़ा, किसी को सैनिक और किसी को सेनापति बनाता और आप राजाबनकर शासन करता था। एक दिन संयोग वश चाणक्य अचानक वहीं चले आये और चन्द्रगुप्त की ऐसी चेष्टाएँ देखकर बड़े आश्चर्य में पड़ गये और लड़कों से पूछा, कि यह लड़का किसका है।

लड़कों ने कहा,—यह एक परिव्राजक का पुत्र है; क्योंकि जब यह गर्भ में था, तभी इसके माता-पिता तथा नानाने इसे एक परिव्राजक को देने की प्रतिज्ञा की थी।

लड़कों की बातें सुनते ही चाणक्य समझ गया, कि यह तो वही बालक है, जिसकी गर्भवती माता की इच्छा मैंने पूर्ण की थी। चाणक्य ने उस लड़के को पास बुलाकर कहा,-तेरे माता पिता ने मुझे समर्पण किया है, वह परिव्राजक मैं ही हूँ। आ, तू मेरे साथ चल। यह राजाओं की नकल क्या करता है। चल, मैं तुझे सच्चा राज्य देकर राजा बनाऊँ।

अन्य लोगों के मत से चन्द्रगुप्त मुरा नामकी दासी के गर्भ से उत्पन्न राजा नन्दका ही पुत्र था। इसी से मौर्य के नाम से भी चन्द्रगुप्त प्रसिद्ध है। जब चाणक्य राजा नन्दकी सभा से अपमानित होकर चला, तब उसने नन्द वंश को जड़ से उखाड़ने की प्रतिज्ञा के साथ-साथ यह भी कहा कि जो कोई इस समय इस सभा से उठकर मेरे साथ चलेगा, उसी को मैं पाटलिपुत्र के राज्यासन पर प्रतिष्ठित करूंगा। यह सुनकर चन्द्रगुप्त ने, जो उसी सभा में बैठा था, सोचा कि मैं किसी प्रकार राज्य का अधिकारी तो नहीं हूँ; पर कदाचित् इस ब्राह्मण के द्वारा राज्य पा जाऊं इस प्रकार विचार कर वह उठ खड़ा हुआ और सबके देखते-देखते चाणक्य के साथ हो लिया। चाणक्य चन्द्रगुप्त को अपने साथ लेकर पाटलिपुत्र से बिदा हुआ और कुछ ही दिनों में उसने अपनी विद्वता एवं नीति निपुणता के द्वारा कई राजाओं को मिला लिया। उनको मिलाकर उसने पाटलिपुत्र पर चढ़ाई कर दी और राजा नन्द को सपरिवार, स सैन्य नष्ट-भ्रष्ट कराके चन्द्रगुप्त को पाटलिपुत्र का राजा बना दिया। चन्द्रगुप्त बड़े प्रतापी राजा हुए। अपने शासन काल में इन्होंने भी बड़ा यश प्राप्त किया। चन्द्रगुप्त के ऐहिक लीला संवरण करके परलोक चले जानेपर उसके पुत्र बिन्दुसार तथा बिन्दुसार के पश्चात् अशोक राज्यगद्दीपर आसीन हुए। ये बड़े ही धर्म्मात्मा, विद्याप्रेमी प्रजा पालक थे। उन्होंने अपने

शासन काल में अनेक शिलालेख, स्तम्भ तथा स्तूप प्रतिष्ठित किये थे। इनके गुण गान से भारतीय इतिहास आज भी ओतप्रोत है। अशोक का पुत्र कुणाल था। वह दोनों आँखों का अन्धा था। अतएव उसका पुत्र (अशोक का पौत्र) सम्प्रति अशोक के पश्चात पाटलिपुत्र का राजा हुआ था। ये बड़े पराक्रमी, पुण्यात्मा तथा शूर-वीर थे। थोड़े ही दिनों में इन्होंने सारे भूमण्डल को अपने अधीन कर लिया और इन्द्र के समान अपने प्रजावर्ग का पालन करने लगे। चन्द्रगुप्त के समय भयंकर दुष्काल पड़ा। इससे साधु लोग यत्र-तत्र निर्वाह के योग्य स्थानों को चले गये। इससे पठन-पाठन न होने के कारण वे पठित बिषयों को भी भूलने लगे। जब द्वादशवर्ष दुष्काल बीत गया, तब पाठलिपुत्र नगर में समस्त संघ ने मिलकर श्रुत ज्ञान का मिलान किया, तो ग्यारह अंग मिले; किन्तु बारहवाँ अंग दृष्टिवाद न मिला। व्यवच्छेद हो गया था। उस समय नेपाल देश के मार्ग में चतुर्दश पूर्वधर श्रुत केवली श्रीभद्रबाहु स्वामी विचरते थे। संघने साधु समुदाय को पढ़ाने के लिये श्री भद्र बाहुजी को बुलाने के लिये दो मुनियों को भेजा, किन्तु उस समय भद्रबाहुजी महाराज ने महाप्राण नामक ध्यानकी आराधना आरम्भ की हुई थी। अतएव उन्होंने साधुओ से कहा, कि इस समय मैं पाटलिपुत्र नहीं जा सकता, किन्तु यदि कुछ बुद्धिमान साधु यहां आवें, तो किसी प्रकार मैं कुछ समय निकालकर प्रतिदिन सात बाचनांए दे दिया करूंगा। साधुओं ने आकर संघ से यह बात कही और संघ ने इसे स्वीकार करके स्थूल भद्रादि पांच सौ बुद्धिमान साधुओं को दृष्टिवाद पढ़ने के लिये श्रीभद्रबाहुजी आचार्य के पास भेजा। आचार्य महाराज सबको पढ़ाने लगे। थोडी बांचना मिलने के कारण साधुओं का मन न जमा। अतएव कुछ कालबाद स्थूलभद्रजी के सिवाय सब साधु लौट आये। अब आचार्य महाराज का सब समय अकेला श्रीस्थूलभद्रजी को ही मिलने लगा। ये महा प्रज्ञावान् भी थे। अतएव शीघ्र ही चतुर्दश पूर्व धर हो गये। भगवान् श्रीमहावीर स्वामी के मोक्ष हो गये बाद एक सौ सत्तर वर्ष व्यतीत होने पर श्रीभद्रबाहु स्वामी स्थूलभद्र जी को आचार्य पद देकर स्वर्ग सिधार गये। आचार्य श्रीस्थूलभद्रजी के दो शिष्य थे, जिनमें बड़े का नाम आर्यमहागिरि और छोटे का नाम आर्यसुहस्ती था। ये दोनों ही बड़े पवित्र चारित्रवाले भवभीरु और धर्म रक्षक थे। प्रज्ञावान् होने से थोड़े ही समय में उन दोनों ने गुरु महाराज से दशपूर्व की विद्या पढ़ ली। एक दिन अपनी आयु को पूर्ण हुआ समझकर महात्मा श्रीस्थूलभद्रजी उन दोनों शिष्यों

को आचार्य पद देकर समाधि पूर्वक स्वर्गगमन कर गये। ये दोनों आचार्य अपने-अपने गच्छ के साथ पृथ्वी पर विचरने लगे।

एक दिन वे दोनों ही आचार्य बिहार करते हुए पाटलिपुत्र नगर में पधारे। यहां उनकी राजा सम्प्रति से भेंट हुई। राजा आर्य सुहस्ती सूरि महाराज को बन्दना करने के लिये महल से उतरे और जमीन पर मस्तक टेक कर बन्दना की पीछे धर्म के विषय में आचार्य महाराज से कुछ प्रश्न किये। उन प्रश्नों का उत्तर दे देने के बाद आचार्य महाराज ने राजा के पूर्व जन्म की कथा कह सुनायी। आचार्य महाराज से अपने पूर्वभव का वृत्तान्त सुनकर राजा हाथ जोड़कर बोले,—

भगवन्! आज दिन मैं जिन विभूतियों का उपभोग कर रहा हूं, वह सब आपकी ही कृपा का फल हैं। अतएव आप मुझे धर्म-शिक्षा से अनुगृहीत करें। भगवन् आर्य सुहस्ती सूरि ने उन्हें धर्म में दृढ़ रहने का आदेश दिया। उस दिन से राजा सम्प्रति परम श्रावक बन गए। और अपने नगर को देवालयों चैत्यालयों, भोजनालयों, औषधालयों, विद्यालयों, तथा दान शालाओं से विभूषित कर दिया। इसी समय आर्य महागिरि और आर्य सुहस्तीसूरि में परस्पर विवाद हो जाने के कारण पृथक-पृथक दो मार्ग हो गये। यहां वीर स्वामी ने पहले ही कह दिया था, अस्तु।

मदीये शिष्य सन्ताने स्थूलभद्र मुनेःपरं।
पत्प्रकर्षा साधू नां समाचारी भविष्यति।

उपर्युक्त उपाख्यानों से स्पष्ट है, कि पाटलिपुत्र बहुत ही प्राचीन और जैन धर्म का केन्द्र है। यदि कहा जाये कि पाटलिपुत्र जैन धर्म के विशेष विकास के लिये ही स्थापित हुआ था, तो कोई अत्युक्ति न होगी। पाटलिपुत्र ही एक स्थान है, जहां परम प्रतापी जैन धर्मावलम्बी उदायी से सम्प्रति पर्यन्त राजाओं का शासन पीढ़ीदर पीढ़ीतक अविच्छिन्न कायम रहा। स्थूलभद्रजी के समान सर्वज्ञ एवं सेठ सुदर्शन के समान केवल ज्ञान और महापुरुषों का जन्मस्थान तथा ज्ञान विकास का एकमात्र स्थान पाटलिपुत्र ही है।

चन्द्रगुप्त के समय में सबसे प्रथम ग्रीस का राजदूत मेगास्थनीज पाटलिपुत्र में आया था। उसके बाद विदेशियों का आवागमन प्रारम्भ हो गया

मुहम्मद गौरी के आगमन के पूर्व और सम्प्रति राजा के पश्चात् और भी कितने ही हिन्दू राजाओं ने पाटलिपुत्र का शासन किया था किन्तु पीछे पाटलिपुत्र पर मुसलमान बादशाहों का अधिकार हो गया। मुसलमान बादशाहों में शेरशाह ने पाटलिपुत्र को पटने के नाम से बदल दिया, जो आजतक पटने के ही नाम से प्रसिद्ध है।

पटने का अन्तिम मुसलमान शासक नवाब मीरकासिम था। उसने सन् १७६३ ई० में अंग्रेजों के साथ युद्ध किया। युद्ध में अंग्रेजों की विजय हुई और पटने का अधिकार एलिस साहब के हाथ लगा। पीछे क्रमशः इस्ट इण्डिया कम्पनी से ब्रिटिश गवर्नमेण्ट के हाथ में आया। अंग्रेजों के हाथ में आनेपर पटने में सर्वत्र शान्ति रही; किन्तु एक बार सन् १८५७ ई० को पटने में फिर युद्ध की आग प्रज्वलित हुई थी, जो आज सिपाही बिद्रोह के नाम से विख्यात है। यद्यपि यह विद्रोह भयंकर रूप धारण करके भारत के अनेक अंचल में फैला; किन्तु सबका केन्द्र पटना ही था। अतएव इतिहास में सिपाही विद्रोह के विषय में पटने का ही विशेष उल्लेख है।

भूतपूर्व राजाओं तथा धर्म एवं धर्माचार्यों के अनेक स्मृतिचिन्ह पटने में थे, किन्तु आज वे सब नष्ट भ्रष्ट हो गये। जो टूटेखण्डहरकुछ (भग्नावशेष) बचे है, उनकी दशा भी बहुत ही शोचनीय है। जिस किसी उपाय से अवशिष्ट प्राचीन स्मृति की रक्षा करना इस समय नितान्त आवश्यक तथा मनुष्यमात्र का परम कर्त्तव्य होना चाहिये। क्यों कि इस समय जब कि प्रत्येक जाति और समाज अपना प्राचीन गौरव प्राप्त करने के लिये उत्सुक हो रही है, जो एक मात्र प्राचीन स्मृति चिन्हों की रक्षा करना तथा उन्हें आदर्श के आधार पर भावी उन्नति की ओर अग्रसर होना ही उपयुक्त होगा। अन्यथा पूर्व गौरव प्राप्त करने के लिये सारे परिश्रम और यत्न शशकश्टंग (खरगोश के सींग) को ढूढ़ने के लिये जंगल-जंगल घूमने के समान व्यर्थ एवं कष्टदायक होने के अतिरिक्त और कुछ नहीं होगा। सबसे बढ़कर जैन स्मृतियों की दशा खराब हो रही है। इसका प्रधान कारण पटने में जैनियों की कमी तथा धन का अभाव है। अतएव अन्य देश-देशान्तरों के जैन-भाइयों को तन-मन-धन से उपयुक्त पुण्यकार्य में हाथ बटाकर यश प्राप्त करना चाहिये, नहीं तो यदि शीघ्र उस ओर ध्यान नहीं दिया जायेगा, तो वे स्मृतियां भी दर्शनीय न रहकर केवल स्मरणीय ही रह जायेंगी।

पटने का भौगोलिक, विवरण तथा प्राकृतिक दृश्य

पटना बिहार प्रदेश के मगध प्रान्त में गंगा के दक्षिण तटपर अवस्थित है। यहां ई० आई० रेलवे के तीन मुख्य स्टेशन शहर के अन्दर हैं : - (१) पटना सिटी (बेगमपुर,) (२) (गुलज़ार बाग,) (३) पटना जंकशन। इसके उत्तर गंगा, दक्षिण जल्ला नाम की एक छीलल-नदी, पूर्व में पुन-पुन नदी-पश्चिम में शोणभद्र या गंगा की एक नहर है। इसका क्षेत्रफल ऐसे तो बहुत ज्यादा है; किन्तु मुख्य अट्ठारह वर्ग मील है – नव मील लम्बा और दो मील चौड़ा हैं, जो इस समय पूर्व और पश्चिम दरवाजे के नाम से प्रसिद्ध हैं।

श्रीस्थूलभद्र श्वामी तथा सुदर्शन सेठ के मन्दिर

यहां जैनियों के मन्दिरों में सबसे प्राचीन, तथा प्रधान परम पूज्य श्रीस्थूलभद्रजी और श्री सुदर्शन सेठ के दो मंदिर गुलजार बागमुहल्ले में मशहूर हैं। यहां प्रत्येक वर्ष देश देशान्तरों से अनेक नर-नारी जैन यात्री दर्शन के लिये आते हैं। इन मन्दिरों की निर्माण–प्रणाली के देखने से उनकी प्राचीनता साफ ज़ाहिर होती है। ये दोनों स्थान जिस प्रकार भव्य है, उसी प्रकार ज्ञान और उत्साह को बढ़ाने वाले हैं। इन स्थानों के देखने से हृदय में स्वभावतः एक अनिर्वचनीय भाव उत्पन्न होता है। यदि वह भाव सदा के लिये स्थिर रह जाये, तो फिर क्या पूछना मनुष्य वास्तविक मनुष्य हो जाये। इतिहास में प्रेमियों के लिये ये दोनों स्थान जैन-इतिहास की बहुमूल्य सामग्री हो जाती है। इनके अतिरिक्त डंका कूचा बाड़े की गली आदि मुहल्लों में जैनियों के अनेक देवालय तथा चैत्यालय है, जो इस समय छिन्न भिन्न तथा मलिन दशामें पड़े है।

श्री बडी पटन देवीजी और छोटी पटन देवी–ये दोनों स्थान भी बहुत प्राचीन तथा हिंदुओं के परम पूज्य तथा आराध्य है। इनकी बनावट से भी प्राचीनता टपकती रहती है। पहला चौक से कुछ पूर्व स्वनाम-बिख्यात महल्ले में है और दूसरा महाराज गज्ज नामक महल्ले में है।

श्रीकाली मंदिर–यह स्थान छोटी पटनदेवी के समीप है। यह स्थान कितना प्राचीन है, यह कहा नहीं जा सकता किन्तु परम सिद्ध तथा रमणीक है।

श्री गोपीनाथजी का मंदिर–यह स्थान भी बहुत प्राचीन और भव्य है, किन्तु उसकी प्रतिमा प्राचीन नहीं है। बीच में कभी किसी कारण से प्रतिमा का परिवर्तन हुआ है। ऐसा जान पड़ता है।

श्री आगम कुआं और शीतलास्थान–यह बहुत ही सिद्ध परम पवित्र एवं बहुत प्राचीन स्थान है। कुआँ बहुत विशाल है। लोगों का विश्वास है कि आगम कुआं के जल का स्पर्श मात्र करने से कई प्रकार के रोग निर्मूल हो जाते है। अतएव अनेक कठिन बीमारियों में उक्त कुएं का जल व्यवहार और सेवन किया जाता है। हिन्दू लोग उसे अनादि तथा स्वयंभूत मानते हैं, किन्तु कई एक ऐतिहासिकों का मत है, कि इसका निर्माण सम्राट अशोक के समय में हुआ था। जो भी हो, यह स्थान अति प्राचीन है, इसमें सन्देह नहीं है। चैत्र से आषाढ़ तक चार महीनों के प्रत्येक कृष्ण पक्ष की अष्टमी को यहां मेला लगता हैं, जो बसिअवराके नामसे विख्यात है। इस अवसर पर नगर-भर के आबाल-वृद्ध नर-नारी यहां उपस्थित होते हैं। और दर्शन पूजनादि के द्वारा आमोद-प्रमोद करते है।

यह स्थान भी बहुत ही जीर्ण-शीर्ण हो गया था, किन्तु बीस वर्ष हुए, बिहार सरकार के द्वारा इसका जीर्णोद्धार किया गया है। जीर्णोद्धार के समय ठेकेदार को बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा था। पूर्ण परिश्रम तथा यन्त्र करने पर भी तीन दिन तक पानी निकालनेवली मशीन न चल सकी थी। पीछे बहुत पूजा-पाठ और अनुनय विनय करने पर मशीन चलने लगी। आठ दिन तक दिन रात मशीन के चलने पर मिट्टी निकालने काम शुरू हुआ, तो प्रतिदिन सबेरे ५ बजे से १० बजे तक मशीन चलायी जाती, १० बजे से ५ बजे सायंकाल तक मिट्टी निकाली जाती, उसके बाद १० बजे रात तक फिर मशीन चलायी जाती थी। इस प्रकार लगातार तीन महीने तक अन वरत परिश्रम करने पर भी कुएं के निम्न तलतक सफाई न हो सकी और न उसकी गहराई का ही पता चला। तब लाचार सफाई का काम बंदकर मरम्मत का काम प्रारम्भ करना पड़ा। सफाई करते समय हजारों पुरातन सिक्के एवं अन्यात्य कितनी ही चीजें निकली। लोटा आदि पात्रों की तो कोई गणना ही न थी। इस प्रकार कई हज़ार की सम्पत्ति बिहार–सरकार को उस कुएं से प्राप्त हुई थी। यह स्थान गुलजार बाग के प्रधान जैन तीर्थ कमल दह के समीप ही स्वनाम ख्यात महल्ले में अवस्थित है।

इसके अतिरिक्त अन्यान्य कितने ही हिंदुओं के देव-मंदिर तथा तीर्थस्थान पटने में है, जहाँ समय समय पर वारुणि आदि नामों से मेले लगते तथा लोग उनके दर्शन पूजन से अपनी आत्माओं को पवित्र करते है।

श्री हरमन्दिर–यह सिक्खों का परम तीर्थस्थान हैं। सिक्खों के सर्वतीर्थों में इसका दूसरा नम्बर है। यहाँ सिक्ख गुरु श्री गोविन्दसिंह का जन्मस्थान कहा जाता है। यहाँ ग्रन्थ साहब चक्रा दण्ड और खड़ाऊं का दर्शन यात्रियों को कराया जाता है, इस मन्दिर के भीतर एक कमरा अनेक अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित है, जो यात्रियों को दिखलाया जाता है। यहां इतनी लम्बी-लम्बी तलवारे तथा बन्दूके है, उतनी बड़ी और लम्बी आजकल कहीं देखने या सुनने में नहीं आती। इनके अतिरिक्त अन्यान्य अस्त्र-शस्त्र भी बहुत बड़े आकार के हैं। ये सब शस्त्रास्त्र किनके है और यहां क्यों रखे गये है, इत्यादि बाते पूछने पर उनका पूरा-पूरा वृत्तान्त वहां के महन्त बहुत सम्मान के साथ लोगों को सुनाते है। सिक्खों का विश्वास है, कि गुरु गोविन्द सिंह फिर एक बार यहां आयेंगे। उस समय मन्दिर के भीतर रखी हुई तलवार आपसे आप ऊपर को उठ जायेगी तथा कुएं का जल खारी से मीठा हो जायेगा। अंग्रेज भी इस स्थान को सम्मान की दृष्टि से देखते है। प्रायः इस स्थान के प्रबन्ध की देख रेख का भार अंशतः यहां के प्रधान जज के ऊपर भी रहता है। इसकी शाखा और भी कई नगरों में है। कलकत्ते में हरिसन् रोड की बड़ी संगत इसकी शाखा है। यह स्थान झाऊगंज महल्ले के पास स्वनाम धन्य महल्ले में हैं।

इसके अतिरिक्त मैनी संगत, नून गोला की संगत पश्चिम दरवाजे की संगत आदि कई स्थान सिक्खों तथा नानक शाहियों के है, जो परम भव्य तथा प्रभावोत्पादक है।

मुस्लिम–स्मारक–मुसलमान बादशाहों तथा सिद्ध फकीरों (आलिम, पीर, औलिया) के भी कितने ही स्मारक स्थान है; जैसे–पत्थर की मसजिद, पक्की दरगाह, त्रिपौलिया, छोटी मथनी, बड़ी मथनी आदि। ये सब स्थान शहर के अनेक महल्लों में है। मुसलमान इन स्थानों को बड़े आदर से देखते है। मुसलमान फकीरों में अन्तिम सिद्ध फकीर टिकिया साईं हुई। उसकी प्रसिद्धी बहुत है अपने तपोबल से इस फकीर ने ऐसे-ऐसे आश्चर्यजनक कार्यकर दिखाये कि जिनकी चर्चा आज दिन भी पटना निवासी बराबर

किया करते है। इस फकीर को हुए अभी बहुत दिन नहीं हुए हैं—अन्दाज एक सौ वर्ष के लगभग हुए है।

अंग्रेजी साम्राज्य–गोल-घर यह पटने की पश्चिमी सीमा के अन्त में अवस्थित है। इसकी उंचाई, मोटाई, तथा परिधि बहुत ही अधिक है और देखने योग्य है। यह सन् १७८४ ई० में अकाल-निवारण के लिये इस्ट इण्डिया कम्पनी के द्वारा निर्माण कराया गया था।

इसके अतिरिक्त सन् १८५७ ई० के सिपाही विद्रोह में आहत अंग्रेजों का स्मारक (कब्रस्तान) है, जो आज भी गिरजा के नाम से प्रसिद्ध है।

आधुनिक दृश्यों में हाईकोर्ट तथा लाट साहब का निवास स्थान अत्यन्त मनोरम और दर्शनीय स्थित है।

इस प्रकार जैन शासन-कालसे अबतक प्रत्येक जाति, धर्म और समाज के स्मारक चिन्हों से अलंकृत एवं विभूषित पटना-नगर मनुष्य मात्र का गौरव स्थान है। अतएव मनुष्य मात्र का कर्तव्य है, कि सर्वतो भाव से अपनी स्मृतियों की इतिहास के एक बड़े भारी अंश को नष्ट होने से बचाकर सुरक्षित रखें तथा पटने को पवित्र तीर्थस्थान समझकर समय-समय पर यथा योग्य सहायता प्रदान करके धार्मिक एवं आर्थिक विषयों में उन्नति की ओर अग्रसर करना चाहिये

क्रमशः

जैन दर्शन में पुनर्जन्म की मान्यता

समणी मंगल प्रज्ञा

साहुस्स दरिसणेण तस्स, अज्झवसाणम्मि सोहणे।
मोहंगयस्स संतस्स, जाईसरणं समुप्पन्नं ।।[१]

साधु के दर्शन और अध्यवसाय पवित्र होने पर 'मैंने ऐसा कहीं देखा है' -इस विषय में (मृंगापुत्र) सम्मोहित हो गया, चित्तवृत्ति सघनरूप में एकाग्र हो गयी और विकल्प शान्त हो गये। इस अवस्था में उसे पूर्वजन्म की स्मृति हो आयी।

३. ईहा-अपोह-मार्गणा-गवेषणा– ईहा, अपोह, मार्गणा एवं गवेषणा--ये चार पद 'जातिस्मृति' की प्रक्रिया को प्रकट करते हैं। आचारांग भाष्य में इस विवेचना के प्रसंग में मेघकुमार का उदाहरण प्रस्तुत किया है–

"जैसे ही मेघकुमार ने मेरुप्रभ हाथी का नाम सुना, वहां उसकी ईहा (पूर्वस्मृति के लिए प्रारम्भिक मानसिक चेष्टा) प्रवत्त हुयी। उस हाथी को जानने के लिये चित्त में कुछ आन्दोलन शुरू हुआ। उसके बाद अपोह हुआ–क्या मैं हाथी था? यह तर्कणा (मीमांसा) करते हुए वह मार्गणा में प्रविष्ट हुआ। अपने अतीत का अन्वेषण करने के लिए वह अपने द्वारा अनुभूत अतीत की सीमा में प्रवेश कर गया। अतीत का चिंतन करते-करते उसने गवेषणा प्रारम्भ की। जैसे आहार की अन्वेषणा में प्रवृत्त गाय पूर्व प्राप्त आहार के स्थान को प्राप्त कर लेती है वैसे ही गवेषणा करते हुए मेघकुमार को एकाग्र-अध्यवसाय से हाथी के रूप में अपने जन्म की स्मृति उपलब्ध हो गयी।[२]"

---

१. उत्तरज्झयणाणि, १९ / ७

२. आचारांग भाष्य सूत्र १ – ४, पृ. २२

जाति-स्मृति की उभयरूपता

जाति-स्मरण ज्ञान दो प्रकार का होता है –कुछ मनुष्यों को तदावरणीय (जातिस्मृति को आवृत्त करने वाले) कर्मों का क्षयोपशम होने से जाति-स्मरण ज्ञान होता है, वह अनिमित्तक है। बाह्य निमित्तों से उपलब्ध होने वाला जाति-स्मरण ज्ञान सनिमित्तक है।

पुनर्जन्म के हेतु

आचारांग ने माया और प्रमाद को पुनर्भव का हेतु माना है।[३] मायावी एवं प्रमादी व्यक्ति जन्म-मरण के चक्र का विच्छेद नहीं कर सकता। जिस पुरुष का चित्त विषय और कषाय से संस्कारित है, उसे मायावी कहा जाता है। मायावी व्यक्ति के परिणामों की शुद्धि नहीं होती। प्रमादी पुरुष उचित आचरण नहीं कर सकता। इसलिए वह बार-बार जन्म ग्रहण करता है मोह को भी पुनर्जन्म का कारण माना जाता है। मोह के मूढ़ मनुष्य बार-बार जन्म-मरण को प्राप्त होता है। आत्मा का अस्तित्व जन्म-मरण का हेतु नहीं है। जन्म-मरण का हेतु मोह है।[४] मोह, माया, प्रमाद के कारण जीव के जन्म-मरण का चक्र चलता रहता है।

भारतीय चिन्तन के अनुसार कर्म पुनर्जन्म का मूल है। राग और द्वेष कर्म के मूल हैं।[५] भावकर्म से द्रव्यकर्म, द्रव्यकर्म से भाव कर्म का प्रादुर्भाव होता रहता है। अनिगृहीत क्रोध, मान, माया एवं लोभ आदि कषाय पुनर्जन्म के मूल को सिंचन देते हैं–

कोहो य माणो य अणिग्गहीया,
माय य लोभो य पवड्ढमाणा।
चत्तारि एए कसिणा कसाया,

---

३. आयारो ३/ १४, माई पमाई पुणरेइ गब्भं ।

४. वही, ५ / ७ मोहेण गब्भं मरणाति एति ।

५. उत्तरज्झयणाणि ३२ / ७

सिंचंति मूलाइं पुणब्भवस्स।।[१]

कर्म का नाश हुए बिना पुनर्जन्म की श्रृंखला समाप्त नहीं हो सकती। कारण कर्म है। अतः कर्म का नाश आवश्यक है। आचारांग आदि शास्त्र बार-बार कर्म शरीर को नष्ट करने का निर्देश देते हैं–

'मुणी मोणं समादाय, धुणे कम्मसरीरगं[२]**'**

कर्म एवं पुनर्जन्म का परस्पर सघन सम्बन्ध है। अध्यात्म का सर्वोच्च लक्ष्य है–दुःख मुक्ति एवं स्वभावप्राप्ति। उसकी उपलब्धि जन्म-मरण के चक्र से मुक्त होने से ही मिल सकती है। उस मुक्ति की प्राप्ति कर्म के सर्वथा नाश से ही संभव है।

पूर्वजन्म की स्मृति से आत्मा से सम्बंधित संदेह का निवारण

जैन दर्शन की आचार-मीमांसा का आधारभूत तत्त्व आत्मा है। आत्म स्वीकृति शून्य आचार अधः पतन करवाने वाला होता है। आत्मा की स्वीकृति जैनदर्शन में है। आत्मा का अवबोध हो जाने से वह स्वीकृति अनुभव के स्तर पर आ जाती है। आत्मा के बोध का एक स्पष्ट लक्षण है–पूर्वजन्म। जब पूर्वजन्म या पुनर्जन्म ज्ञात हो जाता है तब आत्मा के विषय में संदेह नहीं रहता। भगवान् महावीर श्रुत से अधिक साक्षात्कार में विश्वास करते हैं। जातिस्मृति की अवधारणा इस विश्वास को संपुष्ट करती है।

प्राचीन समय में धर्म में श्रद्धा, आस्था को स्थिर रखने के लिए गुरु उसे जातिस्मृति करवा दिया करते थे। इस संदर्भ में मेघकुमार का उदाहरण हमारे सामने है।[३] महावीर ने मेघकुमार को जाति-स्मृति करवा दी थी। जाति-स्मृति की प्रक्रिया क्या थी, वह वर्तमान में स्पष्ट रूप से उपलब्ध नहीं है किन्तु वर्तमान में भी जाति-स्मृति के अनेक उदाहरण उपलब्ध हैं। उनकी यथार्थता भी असंदिग्ध है। परामनोविज्ञान के क्षेत्र में कार्य करने लोग इस दिशा में गम्भीरता से अन्वेषण कर रहे हैं। चूंकि विज्ञान प्रयोग पर आधारित प्रक्रिया है। जिसका पुनर्जन्म होता है वह आत्म-तत्त्व अमूर्त्त है, जो सीधा विज्ञान के अन्वेषण का विषय नहीं बन पा रहा है। अमूर्त्त ऐन्द्रियिक ज्ञान का विषय नहीं बन सकता।[४] किन्तु संसारी आत्मा तैजस एवं कार्मण शरीर से युक्त होने के

---

१. दसवेआलियं ८ /३९
२. आयारो २/ १६३
३. अंगसुत्ताणि ३, (नायाधम्मकहाओ) १ / १९०
४. उत्तरज्झयणाणि १४ / १९ नो इंदियग्गेज्झ अमुत्तभावा

कारण कथंचित् मूर्त्त भी है। तैजस शरीर अष्टस्पर्शी पुद्गल स्कन्ध है। वह विज्ञान के उपकरणों का विषय बन सकता है। यदि ऐसा हुआ तो इस क्षेत्र में अभिनव ज्ञान-विज्ञान की शाखाओं का उद्घाटन हो सकेगा।

जातिस्मृति सबको क्यों नहीं होती?

पूर्वजन्म की स्मृति सभी प्राणियों को नहीं होती–ऐसा क्यों होता है? इस संदर्भ में तन्दुलवेयालिय प्रकरण में समाधान उपलब्ध है। वहां कहा गया है–जन्म और मृत्यु के समय जो दुःख होता है, उस दुःख से सम्मूढ़ होने के कारण व्यक्ति को पूर्वजन्म की स्मृति नहीं रहती–

"जायमाणस्स जं दुक्खं मरमाणस्स वा पुणो,

तेण दुक्खेण समूढो जाइं सरइ नप्पणो।[1]"

मूर्च्छा में स्मृति लुप्त हो जाती है, इसलिए पूर्वजन्म की स्मृति नहीं रहती तथा विशिष्ट निमित्त के बिना पूर्वजन्म के विद्यमान संस्कारों का भी साक्षात्कार नहीं होता। अतः इन कारणों से जाति-स्मरण की सर्वव्याकता नहीं है।

जाति-स्मृति के लाभ

जाति-स्मृति से धर्म के प्रति सहज श्रद्धा और संवेग में वृद्धि होती है। जाति स्मृति वाले प्राणियों को संसारचक्र का साक्षात्कार हो जाता है। आत्मा के त्रैकालिक अस्तित्व में उसे कोई संदेह नहीं रहता। मुमुक्षा एवं अनासक्ति का सहज विकास होता है।

मृत्यु के पश्चात् किसी भी योनि में जन्म

पुनर्जन्म के सिद्धान्त का एक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि मनुष्य मृत्यु के पश्चात् फिर मनुष्य भी हो सकता है तथा नरक, तिर्यच्च या देव किसी भी गति में उत्पन्न भी हो सकता है। वैसे ही तिर्यञ्च गति के जीव पुनः तिर्यञ्च

---

१. तन्दुलवेयालियं, पइण्णयं (संपा. प्रो. सागरमल जैन, उदयपुर, १९९१) ३९

गति में अथवा देव, नरक मनुष्य गति में पैदा हो सकते हैं। नारक जीव मरकर मनुष्य या तिर्यञ्च गति में पैदा होते हैं वे नरक गति से सीधे देवगति में नहीं जा सकते एवं नरक से नरक में भी पैदा नहीं हो सकते। उसी प्रकार देव देवगति से च्युत होकर मनुष्य या तिर्यञ्च बनते हैं। पुनः देव से देव नहीं बन सकते तथा नरक में भी नहीं जाते, ऐसी जैनदर्शन की मान्यता है।

भगवती सूत्र में ऐसे अनेक प्रसंग प्राप्त होते हैं। शालवृक्ष की चर्चा के प्रसंग में कहा गया शालवृक्ष यहां से नष्ट होकर पुनः शालवृक्ष के रूप में राजगृह में उत्पन्न होगा, वहां से च्युत होकर महाविदेह में उत्पन्न होकर सब दुःखों को नष्ट करेगा।[२]

उसी प्रकार कार्तिक सेठ के प्रसंग में कहा गया कार्तिक सेठ मरकर दो सागरोपम स्थिति वाले शक्र के रूप में उत्पन्न हुआ।[३] प्रस्तुत प्रथम उदाहरण में तिर्यञ्च से तिर्यञ्च गति तथा तिर्यञ्च से मनुष्य गति में गमन करने का उल्लेख है तथा दूसरे उदाहरण में मनुष्य गति से देव गति में जाने का उल्लेख है। ऐसे अन्य अनेक उदाहरण आगम में उपलब्ध हैं अतः जिसकी यह मान्यता है कि मनुष्य मरकर मनुष्य ही होता है, स्त्री मरकर स्त्री ही होती है जैनदर्शन इस मान्यता को स्वीकार नहीं करता।

जैन आगमों में पुनर्जन्म की स्वतः सिद्ध सिद्धान्त के रूप में स्वीकृति है। आगमों में तर्क के द्वारा इस सिद्धान्त को स्थापित करने का प्रयत्न नहीं किया है। जैन आगमों में पुनर्जन्म से सम्बन्धित सैंकड़ो-सैकड़ों नियमों का उल्लेख हुआ है। यद्यपि उत्तरवर्ती मध्यकालीन जैन ग्रंथों में पुनर्जन्म को तर्क से सिद्ध करने के प्रयत्न किये गये हैं। जो तात्कालिक परिस्थितियों के अनुकूल ही है। आज परामनोवैज्ञानिक इस क्षेत्र में गम्भीर अन्वेषण कर रहे हैं।

क्रमशः

---

२. अंगसुत्ताणि २, भगवई १४ / १०१-१०४

३. वही, १८ / ५४

जैन धर्म का मूल आधार अहिंसा

श्री पृथ्वीराज जैन

साधु और गृहस्थ धर्म :—

आचार्यों ने हिंसा के चार प्रकार बताए हैं :—

१. संकल्पी – किसी जीव को कष्ट पहुंचाने की भावना से हिंसक प्रवृत्ति करना ।

२. आरम्भी – वह हिंसा है जो खाद्य सामग्री जुटाने तथा उसे तैयार करने आदि में होती है।

३. उद्योगी – जीवन निर्वाह के लिए व्यापार अथवा अन्य व्यवसाय में होने वाली हिंसा।

४. विरोधनी– व्यक्ति, समाज, धर्म स्थान या राष्ट्र आदि पर विपत्ति आने के समय या ब्राह्य आक्रमण की दशा में अपनी रक्षा के उद्देश्य से की जाने वाली हिंसा।

श्रावक केवल संकल्पी हिंसा का ही पूर्ण त्याग कर सकता है। शेष समय और परिस्थिति के अनुसार आवश्यक हो जाती हैं। इनका परिमाण अवश्य कम किया जा सकता है।

अहिंसा का प्रभाव :—

जैन तीर्थंकरों ने सर्व प्रथम मानव-समाज को व्यापक अहिंसा का पवित्र सन्देश दिया था, यह निर्विवाद है। अन्तिम तीर्थंकर भगवान् महावीर का उपदेश किसी न किसी रूप में जैनागमों में अब भी उपलब्ध है। महावीर के समकालीन महात्मा बुद्ध ने भी अपने भिक्षुओं और उपासकों को अहिंसा का उपदेश दिया था। लगभग ५०० वर्ष बाद महात्मा ईसा ने भी अहिंसा पर जोर दिया। इतिहास से हमें यह ज्ञात होता है कि इन महापुरुषों का निस्स्वार्थ प्रयत्न सर्वथा विफल नहीं हुआ। यज्ञों में की जाने वाली पशुबलि प्रायः हट चुकी है, इसके समर्थक बहुत ही कम रह गए हैं। मानव तथा दूसरे प्राणियों के प्रति

दया और सहानुभूति के भावों में यथेष्ट वृद्धि हुई है। धार्मिक दृष्टि से लोग पीड़ितों की सहायता के लिए दान करते हैं, अनाथालय खोलते हैं, औषधालय बनाते हैं; परोपकार के अन्य कार्य भी किए जाते हैं, पशुओं के प्रति क्रूर व्यवहार को भी कोई समझदार पसन्द नहीं करता। स्त्रियों, शूद्रों तथा मज़दूरों आदि से मानुषिक व्यवहार होने लगे हैं और उनके समानाधिकारों की सर्वत्र प्रतिष्ठा हो रही है। शिक्षा के क्षेत्र में छड़ी का स्थान प्रेम ने ग्रहण कर लिया है। दासता की अमानुषिक प्रथा का भी लगभग अन्त हो गया है। चिकित्सा के क्षेत्र में भी ऐसे अनुसंधान हुए जो मानव की असह्य वेदना को दूर करते हैं शाकाहार की ओर भी प्रवृत्ति बढ़ रही है।

किन्तु इस चित्र का दूसरा रुख़ भी है। युद्ध की भयंकरता दिनो पर दिन बढ़ती जाती है और विज्ञान अधिक से अधिक संहारकारी अस्त्र शस्त्रों के निर्माण व अनुसंधान में व्यस्त है। शत्रुदल या शत्रुराष्ट्र के समूचे नाश के प्रयत्न में कोई कमी नहीं रखी जाती। स्वार्थ, शोषण, मिथ्याभाषण, नैतिक पतन तथा दूसरों को लूट कर अपनी स्वार्थसिद्धि करना हमारे जीवन के आवश्यक अंग हो गए हैं।

इस विषम स्थिति का कारण यह है कि जो बात व्यक्तिगत रूप से हेय समझी जाती है, उसे समूह, वर्ग, जाति या राष्ट्र के नाम पर महापुण्य समझा जाता है। झूठ बोलना पाप है किन्तु युद्ध में यह भी एक प्रभावशाली शस्त्र है। युद्ध के समय शत्रु की हत्या से भी पहले सत्य का गला घोंटा जाता है। किसी को तकलीफ़ देना बुरा है। मगर युद्ध में शत्रु पक्ष के एक एक व्यक्ति की जितनी नृशंस हत्या की जाए, उतनी ही अधिक वीरता समझी जाती है। प्यासों के लिए हजारों कुएँ और तालाब खुदवाए जा सकते हैं परन्तु विरोधी पानी की एक एक घूंट के लिए तड़प तड़प कर जान दे, इसमें विजयी पक्ष खुशी के मारे फूला नहीं समाता। हमारे कार्यों में दो प्रकार का यह मापदण्ड ही महात्मा गाँधी की हिंसा की पृष्ठभूमि है।

महात्मा गांधी की अहिंसा :—

महात्मा गांधी के अहिंसा सिद्धांत की सबसे बड़ी विशेषता उसका व्यापक उपयोग है। उनका विश्वास था कि यदि अहिंसा का सिद्धान्त नित्य और शक्तिशाली है तो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उस का व्यवहार होना

चाहिए। किसी भी नियम या सिद्धान्त की सार्थकता तभी मान्य हो सकती है जब हम उसे अपने जीवन में मूर्त्त रूप दे सकें। जिस अहिंसा द्वारा आत्मा में विद्यमान राग, द्वेष, कषाय, स्वार्थ आदि को जलाया जा सकता है, वह समाज और राष्ट्र अथवा विश्व में व्याप्त विष को दूर करने में भी समर्थ है। अतः उन्होंने राजनैतिक दासता से भारत को स्वतन्त्र कराने के लिए अहिंसा का सफल प्रयोग किया। यह गांधी जी की अहिंसा का ही परिणाम था कि भारत के कोने-कोने में स्वतन्त्रता का सन्देश पहुंच गया और बच्चे बच्चे में जन्म सिद्ध अधिकार को प्राप्त करने की भावना उद्दीप्त हो उठी। दक्षिण अफ्रीका में भी उन्होंने सत्याग्रह का प्रयोग किया था। कांग्रेस का लगभग गत ३० वर्ष का इतिहास गांधी जी की विचारधारा से ही प्रभावित है। अस्पृश्यता निवारण के लिए भी उन्होंने अहिंसक मार्ग द्वारा विरोधियों पर विजय पाई। पूंजीपतियों और मज़दूरों के झगड़े का निपटारा करने के लिये भी वह अहिंसक मार्ग को अपनाने का परामर्श देते थे। अहिंसा के बल पर विश्व के सबसे सत्ताशाली ब्रिटिश साम्राज्य से टक्कर लेना खेल न था। मगर गांधी जी अपने आदर्श पर अडिग रहे। उनके विरोधी भी यह स्वीकार करेंगे कि भारत के स्वतंत्र होने में गांधी जी की अहिंसा का सर्वतोमुखी भाग है।

गांधी जी कहते हैं जो बात मैं कहना चाहता हूं और जो करके मरना चाहता हूं वह यह है कि सत्य और अहिंसा को संगठित करूं। अगर वह सब क्षेत्रों के लिए उपयुक्त नहीं हैं तो वे झूठ हैं। मैं कहता हूं कि जीवन की जितनी विभूतियां है सब में अहिंसा का उपयोग है।

महात्मा गांधी के समय तक अहिंसा का जो रूप भारतीय जनता के सन्मुख आ चुका था, उन्होंने उसका समन्वय कर उसे नवीन स्फूर्ति प्रदान की। जैन व बौद्ध निवृत्ति मार्ग समाज में व्याप्त अन्याय से अपने को दूर रखता था। क्योंकि उसे यह विश्वास हो गया कि प्रत्येक प्रवृत्ति हिंसामय है। गीता ने यह बताया कि अन्याय का सशस्त्र प्रत्तिकार करने से भी धर्म में बाधा नहीं आती, हाँ फल की आकांक्षा न रखनी चाहिए। महात्मा गांधी ने कहा कि कर्म तो निष्काम हो किन्तु अन्याय का प्रतिकार हिंसा के स्थान पर अहिंसा से किया जाए।

क्रमशः

संकलन

शाकाहारी सावधान हों

आपको जानकर आश्चर्य होगा कि बाजार में शुद्ध घी के समांतर मटनमेलो (चर्बी) युक्त नकली घी का व्यापार जोरों से चल रहा है। शुद्ध घी की तरह हूबहू लगने वाला बनावटी तेलों के मिश्रम, रंग एवं एसेन्स के साथ बनाये जाने वाले इस घी को व्यापारी भाषा में ***डिस्को घी*** कहा जाता है।

अच्छे आकर्षण पाउच छपवाकर सुंदर अथवा धार्मिक नाम लिखकर डिस्को घी के ये पैकिंग शुद्ध घी के नाम से बाजार में बिक्री दुकानदारों के लिए अच्छे मुनाफा का कारण बन रही है। प्राप्त जानकारी के अनुसार अलग-अलग ब्रॉण्डों के नाम से बिक रहे पैकटों पर एगमार्क लेबल लगे होने से खरीदकर्ता विश्वास के साथ लेता है। ८० से १०० प्रतिशत लाभ वाले इस धंधे में राज्य के फूड इंसपेक्टरों की मिली भगत के कारण विकास हो रहा है। व्यापारियों को ज्यादा कमीशन, फूड इंस्पेक्टरों को रिश्वत एवं उत्पादकों को तगड़ा नफा मिलने से सजा की बात तो दूर? किन्तु इन पर कोई रोक-टोक भी नहीं रही। एगमार्क लेते समय संस्था को नमूने रूप में असली घी भेजा जाता है, जिससे एगमार्क सर्टिफिकेट मिल जाता है। बाद में उसी नाम पर पैकिंग डिस्को घी अर्थात् नकली घी भर कर बेचा जाता है।

नकली घी बनाने में पामोलीन, वेजीटेबल फेट, बटर ऑईल एवं मटनमेलो का उपयोग किया जाता है। प्रत्येक उत्पादक की प्रक्रिया अलग-अलग होती है। कई उत्पादक वेजीटेबल घी एवं मटनमेलो का मिश्रण करते हैं, तो कई बटर ऑईल के साथ मटन मेलो अथवा पामोलीन एवं मटनमेलो का मिश्रण करते हैं। जिसमें ३० प्रतिशत पामोलीन, १० प्रतिशत बटर ऑईल एवं ६० प्रतिशत मटनमेलो का मिश्रण होता है।

लोगों को लगता है कि शुद्ध घी अर्थात् दानेदार होना चाहिये। दानेदार घी देखकर लोग खुश हो जाते हैं। परन्तु पामोलीन एवं मटनमेलो

के मिश्रण को दानेदार बनाना कोई कठिन कार्य नहीं। उपरोक्त मिश्रण को दानेदार बनाने के लिए कपूरी पान (नागरवेल पान) का उपयोग किया जाता है। उत्पादक १० किलो पामोलीन-मटनमेलो के मिश्रण में ५० से ८० नागरवेल के पान डाल देते हैं एवं दूसरे दिन पान निकालने पर केमिकल रीयेक्शन के कारण उपरोक्त मिश्रण दानेदार होने का आभास उत्पन्न करता है। जिसे सुन्दर पैकिंग में नियमित व्यापारियों को पहुँचा दिया जाता है। व्यापारी ग्राहक को देते हैं। ग्राहक दानेदार घी को शुद्ध देशी घी समझकर खुशी से खरीद लेते है। व्यापारी को ५०० ग्राम की एक पेकिंग में ३० रुपये का तगड़ा नफा होता है।

कत्लखानों में बड़े जानवरों की कत्ल से भरपूर मटनमेलो निकलता है। एक जमाने में मात्र साबुन बनाने में मटनमेलो का उपयोग था। आज मटनमेलो के इतने खरीददार होने से साबुन बनाने वाले मटनमेलों की जगह अन्य रासायनिक तैलीय पदार्थ का उपयोग कर रहे हैं। शुद्धता के नाम पर निर्दोष शाकाहारी जनता ने पिछले १० वर्षों में लाखों टन मटनमेलों को पेट में डाल दिया है।

पिछले वर्षों में बायपास सर्जरी के किस्से बढ़ने का यह कारण भी संभव है। आज जिस भाव में घी बाजार में मिल रहा है, उससे भी ये सारी बातें पुख्ता होती हैं क्योंकि शुद्ध घी इस भाव में मिलना संभव ही नहीं है।

शुद्ध खान-पान एवं अहिंसा में विश्वास रखने वालों के सामने यह बहुत बड़ी चुनौती है क्या हमारी नामधारी संस्थायें एवं समाज के आगेवान इस ओर ध्यान देकर कोई ठोस कदम उठायेंगे?

साभार – जे. के संघवी

सम्पादक – शाश्वत धर्म

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 220-8105/2139,(Resi) 329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: (O) 247-6874, (Resi) 246-7707

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Kolkata - 700 007
Ph: 238-7015, 232-4087/4978

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box:16127,
Kolkata -700 017
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 240 0098, 2471833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
13/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2208967, (Resi) 2471750

MAHASINGH RAI MEGH RAJ BAHADUR
Goalpara, Assam

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 455-3586

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 226-2418, (Resi) 475-2730, 476-8730

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Kolkata - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 235 0623, (Resi) 239-6823

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road,
Kolkata - 700 007
Ph: 238-8677/1647,239-6097

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 348-8576/0669/1242
(Resi) 225-5514, 237-8208, 229-1783

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Ph: (O) 282-4649, (Resi) 247-2670

ASHOK KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Kolkata
Ph: 237-4132/236-2072

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata, Ph: 464-1186,

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor,
24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071
Ph: 247-7450/5264

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 238-4755, (Resi) 238-0817

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in
sona@cal3.vsnl.net.in

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 233-1766/238-8846
Mobile: 9831028566
Resi : 355-9641/7196

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2209755
Resi: 464-3235/1541, Fax: (033) 4640547

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 282-8181

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj. Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-55715

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 239-1408

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203 /1 M. G. Road, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 238-9356/0950 (Fact). 557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 229-5047, 9110

C. H. SPINNING & WEAVING MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk. Gangasahar, Bikaner

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021
Office: Tobacco House
1/2, Old Court House Corner
Kolkata -700 001, Ph: 220-2389/3570/3569

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane
Kolkata - 700 026
Phone : 476-1533

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East
Kolkata - 700 069

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 282-7615/7617/2726
Gram : Sudera

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Phone : (Off) 247-7880, 247-8663
(Res) 247-8128, 247-9546

DELUXE TRADING CORPORATION
Distinctive Printers
36, Indian Mirror Street Kolkata - 700 013
Ph: 244-4436

PRADIP KUMAR LUNAWAT
P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue
Kolkata - 700 014, Phone : 249-0103

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Kolkata - 700 001 Ph: 235-2076, 235-5701

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2296256/8730/1029
Resi: 247 6526/6638/2405126
Telex: 021 2333, ARBI IN, Fax : 226 0174

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA RARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726
Fax : 7147717607

SPACE & WINGS
Travel Agents
Domestic & International Airlines
Phone : 242-7806/8835/5852
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Kolkata - 700 001 Fax : 242 8831
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Phone : 001-217-355-0174/0187
e-mail : doogar@uiuc.edu

H. R. ELECTRONICS
Dealers in Electrical Switch gear, starter & spare Parts
Siemens, English Electric L.T./L.K.B.C.H., etc.
32, Ezra Street, 7th Floor, Room No -712A
South Block, Kolkata - 700 001
Room No.- 314, 3rd Floor
Phone : (O) 235 5009/1299, (R) 660-4332

BOTHRA & BOTHRA
12, Noormal Lohia Lane
2nd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 230 0216, (R) 235 9657/9312

CHUNILAL ASHOK KUMAR
30, Cotton Street, 3rd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : 238 7764, (R) 666 4541, 530 9286

ASHOK TRADING COMPANY
Authorised Dealers of
J. K. Steel File. Drills. I. T. Drills. Tapes Center
BIPICO - ECLIPSE Hacksaw Bledes
"FREEMANS" GK Measuring Tapes, 18/C Sukeas Lane,
Kolkata - 700 001, Phone : 242-2345, 242-4461

D. K. SYNTHETICS
Whole Sale Dealer
180, Mahatma Gandhi Road
Mullick Kothi, 1st Floor, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 232 6040, (R) 684181

JAI CHAND VINOD KUMAR
Exclusive Wholesaler of Fancy Sarees
1/1, Noormal Lohia Lane, 2nd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : 238 3328/9678, 239 3450
Fax : 239 3450, 247 7526
Telex : 217761 JVS-IN Grams MINNI-BROS

SUBHASH & SUVRA KHERA
6116, Prairie Circle
Mississauga LS N5Y2
Canada
Phone : 905-785-1243

S. VIJAY CHAND
Vijay Textiles
Whole Sale Merchants
113B Manohar Das Katra, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 238 1388 (R) 247 6105/2750
'Guddi' 10, Jamunalal Bajaj Street
2nd Floor, Kolkata - 700 007

BOTHRA SHIPPING SERVICES
2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Fax No. 220-6400 Ph: 220-7162
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 239-7607)

अ angan
Rajasthan Village Theme Resturant at Swabhumi
89/c, Narkeldanga Main Road, Kolkata - 700 054
Phone : 359 2031, e-mail : www.jiggis.com

PRITAM ELECTRIC & ELECTRONIC PVT. LTD.
Shop No. G- 136, 22, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 236-2210

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007
Phone : 227-1857

RABINDRA SINGH NAHAR
40/4A, Chakraberia South, Kolkata - 700 020
Phone : (O) 244-1309, (R) 475-7458

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Kolkata - 700 054
Ph: 352-8940/334-4140
(Resi) 352-8387/9885

MAUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrellas
45, Armenian Street, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 242-4483/9181, (O) 238-1396/1871
Fax : 231-2151/666-6013

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 007
Phone : 220-4779/0131/5721

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)230-1329, 232-1033
Fax : 91-33-2302413

MANIK CHAND MANOJ KUMAR
11, Clive Row, 3rd Floor, Room No. 4,
Kolkata - 700 001, Phone : 242-4131/4756

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 236-3028, 237-4039

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Phone : 220-0874/9372/221-0246

LILY SUKHANI
7, Bright Appartment, 7 Bright Street
Flat No. 7 C.
Kolkata - 700 019
Phone : 287-0448

In

Loving Memory of their parents

Late, Shree Phool chandji Kharai

&

Late, Smt. Narangi Devi Kharai

卐

From :-

M/s Phool Chand Kharai & Sons

21, Kali Krishna Tagore Street

Kolkata - 700 007

Phone : 233-1609, 239-8628

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
सारांश कि अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL" 226-0881
Fax: + 91-33-245-7591 226-0883
Telex: 021-2101 GANG IN 226-6283
226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 634-6441/644-6442
Fax: 6346287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.
(Formerly: Laxman Singh Jariwala)
Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 514-4496, 513-1086, 513-2203
Fax: 91-011-5131184
e-mail: laxmanjariwala@gems.vsnl.net.in

With Best Compliments.....

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.
Current Transformer upto 66kv.
Dry type Transformer.
Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016
PHONE: 229-7346/4553/226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

१८९

a quarterly on Jainology

JAIN JOURNAL

॥ जैन भवन ॥

JAIN BHAWAN
KOLKATA

শ্রমণ সংস্কৃতি মূলক মাসিক পত্রিকা

শ্রমণ

জৈন ভবন

কোলকাতা

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007

English :

1.	Bhagavati-sutra-Text edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:		
	Vol - 1 (satakas 1- 2)	Price : Rs.	150.00
	Vol - 2 (satakas 3- 6)		150.00
	Vol - 3 (satakas 7- 8)		150.00
	Vol - 4 (satakas 9- 11)		150.00
2.	James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Kolkata ; 1977. pp. x+82 with 45 plates (It is the glorification of the sacred mountain Satrunjaya.)	Price : Rs.	100.00
3.	P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani.	Price : Rs.	15.00
4.	Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord,	Price : Rs.	15.00
5.	Verses from Cidananda Translated by Ganesh Lalwani	Price : Rs.	15.00
6.	Ganesh Lalwani - Jainthology	Price : Rs.	100.00
7.	Lalwani and S. R. Banerjee- Weber's Sacred Literature of the Jains	Price : Rs.	100.00
8.	Prof. S. R. Banerjee Jainism in Different States of India	Price : Rs.	100.00
9.	Prof. S. R. Banerjee Introducing Jainism	Price : Rs.	

Hindi :

1.	Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti Ki Kavita, Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	20.00
3.	Ganesh Lalwani - Nilanjana, Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	30.00
4.	Ganesh Lalwani - Chandan-Murti Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	50.00

5.	Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira	Price : Rs.	60.00
6.	Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Raat,	Price : Rs.	45.00
7.	Ganesh Lalwani -- Panchdasi.	Price : Rs.	100.00
8.	Rajkumari Begani-Yado ke Aine me.	Price : Rs.	30.00
9.	Smt. Lata Bothra - Bhagavan Mahavira Aur Prajatantra	Price : Rs.	15.00
10.	Smt. Lata Bothra - Sanskriti Ka Adi Shrote, Jain Dharm	Price : Rs.	24.00
11.	Prof. S.R. Banerjee - Prakrit Vyakarana Praveshika	Price : Rs.	20.00

Bengali :

1.	Ganesh Lalwani-Atimukta,	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani-Sraman Sanskriti ki Kavita	Price : Rs.	20.00
3.	Puran Chand Shymsukha-Bhagavan Mahavir O Jaina Dharma.	Price : Rs.	15.00
4.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Prasnottare Jaina-Dharma	Price : Rs.	20.00
5.	Dr. Jagatram Bhattacharya Das Baikalik Sutra	Price : Rs.	25.00
6.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Mahavir Kathamrita	Price : Rs.	20.00
7.	Sri Yudhishthir Majhi Sarak Sanskriti O Puruliar Purakirti	Price : Rs.	20.00

Some Other Publications :

1.	Smt. Lata Bothra - Vardhamana Kaise Bane Mahavir	Price : Rs.	15.00
2.	Smt. Lata Bothra - Kesar Kyari Me Mahakta Jain Darshan	Price : Rs.	10.00
3.	Smt. Lata Bothra - Bharat Me Jain Dharma	Price : Rs.	100.00
4.	Acharya Nanesh - Samata Darshan Aur Vyavhar (Bengali)	Price : Rs.	
5.	Shri Suyesh Muniji - Jain Dharma Aur Shasnavali (Bengali)	Price : Rs.	50.00
6.	K.C.Lalwani - Sraman Bhagwan Mahavira	Price : Rs.	25.00

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbus would have feared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 PARK STREET, KOLKATA 700 016

Telephone : 229 8228, Fax : 229 3882, 245 7562

e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)229-8228.
Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020
Phone : (011) 692 7091-94, *Fax* (011) 684 6003.
Regional Office: 8/2 Ulsoor Road,Bangalore 560-042 *Ph*: (080) 559 5508-15, *Fax*: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visits us for a lesson in reality.

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

FOUNDER

LATE SIKHAR CHAND CHURORIA

Our Quality Product of Chanachur.

- Anusandhan
- Rimghim
- Subham
- Raja,
- Picnic,
- Bhaonagari Ghantia

Manufactured By

M/S. K. C. C. FOOD PRODUCT

Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria

P. O. Azimganj, Pin - 742122

Dist: Murshidabad

Phone: Code: 03483 No.: 53232

Cal. Phone: No.: 033 2300432, 522-1580

अहिंसा ही परमफल है, परममित्र है, परम सुख है।
अहिंसा कायरों का नहीं वीरों का अस्त्र है।

卐

arcadia shipping limited

We Own & Operator tramp service on
-M.V.ARCADIA PROGRESS (35224 DWT)
Besides Owing & Operating 8 Self Propeled + 1 Dumb Barges
of between 550-1250 DWT.

We are Associates/General Agents in India for:
Winco Maritime Limited, London
-Puyvast Chartering BV., The Netherlands
-National Petroleum Construction Co., Abu Dhabi

******

We are agents at Mangalore for:
The Shipping Corporation of India Ltd.
(The Indian National Line)

******

Regd. & head Office:
222, Tulsiani Chambers Nariman point,
Mumbai-400 021.
Tel: 2831540/49, 2020416/418/2822765.
Fax: 2872664.
Tlx: 86567 ASPL IN / 83059 CONT IN, / CABLE: SHIPONTIME
E.Mail: vns@arcadiashipping.com

******

Offices at all major Indian Ports & New Delhi & Bangalore.

Tech/W.B./R.N.P.-45/2002
Vol. XXVI No. 4 TITTHAYARA July 2002
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचानी चाहिये।

आचार्य श्री कैलास सागर सूरि ज्ञान मन्दिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र,
कोबा, जि. गांधीनगर, पीन-३८२००९

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225